मूल्य 1 रु.

वर्षः 10 - अंक : 141, मुंबई, मंगलवार, 11 अगस्त, 2020 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त ®

मुंबई हलचल

अब हर सच होगा उजागर

1000 करोड़ ड्रग्स बरामद

...करोड़ का मुंबई में...

प्लास्टिक के पाइप में छिपाकर अफगानिस्तान से ईरान के रास्ते लाई गई थी नशे की खेप

संवाददाता

मुंबई। नवीं मुंबई पोर्ट पर अफगानिस्तान से भारत लाई गई नशे की बड़ी खेप को पकड़ी गई है। करीब 1000 करोड़ रुपए की ड्रग्स को प्लास्टिक के पाइप में छिपाकर अफगानिस्तान से ईरान के रास्ते लाया गया था। जिस पाइप में ड्रग्स को छिपाकर लाया गया था, उसे इस तरह से पेंट किया गया था कि वह बांस दिखे। (शेष पृष्ठ 3 पर)

प्लास्टिक के पाइप को इस तरह से पेंट किया था कि वह बांस जैसा लगे

अब तक का सबसे बड़ा ड्रग्स रैकेट होने का दावा

एजेंसियों का दावा है कि यह अब तक का सबसे बड़े ड्रग्स रैकेट को पकड़ा गया है। इससे पहले, पिछले साल जनवरी में पंजाब पुलिस की एसटीएफ ने 194 किलो हेरोइन अमृतसर जिले से पकड़ी थी। इस सिलसिले में 6 लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

दो कस्टम एजेंट समेत 4 गिरफ्तार

॥शुभ लाभ॥

MIX MITHAI

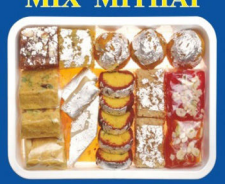

• मोतीचूर लड्डू • काजू कतरी • काजू रोल
• बदाम बर्फी • मलाई पेड़े • रसगुल्ले

MM MITHAIWALA
Malad (W) Tel. : 288 99 501

ठंडा पड़ा नेपाल का मिजाज?

भारत से बातचीत के लिए तलाश रहा रास्ते, विशेषज्ञों से सलाह ले रही ओली सरकार

काठमांडू। चीन के इशारे पर भारत के साथ तनाव बढ़ाने में जुटे नेपाल का मिजाज ठंडा पड़ने लगा है। भारतीय इलाकों को अपने नक्शे में शामिल करके विवाद पैदा करने के बाद पड़ोसी देश अब दोबारा बातचीत करने के लिए रास्ते तलाश रहा है। केपी ओली की सरकार को खुद कोई रास्ता नहीं सूझा तो अब विशेषज्ञों से सलाह ले रही है कि किस तरह दोबारा भारत के साथ रिश्तों को सामान्य किया जाए ताकि बातचीत का सिलसिला बहाल हो। (शेष पृष्ठ 3 पर)

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

हमारी बात

शोध पर संकट

कोरोना के समय सर्वाधिक प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में शोध-अनुसंधान का क्षेत्र प्रमुखता से शामिल है। ज्यादातर शोध परियोजनाएं लंबित हो गई हैं, तो कुछ को किसी तरह ऑनलाइन सहयोग के दम पर पूरा करने की कोशिश हो रही है। शोध की कई बड़ी परियोजनाएं अपने समय से पिछड़ गई हैं। यात्रा सुविधा के अभाव में शोध में अंतरराष्ट्रीय सहयोग-समन्वय में कमी आई है। वैज्ञानिक न सिर्फ विदेश की, बल्कि अपने देश के अंदर भी जरूरी अनुसंधान यात्राएं नहीं कर पा रहे हैं। दशकों से चल रही कई शोध परियोजनाएं पटरी से उतर चुकी हैं। विशेष रूप से अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में इस मामले में स्थिति ज्यादा बिगड़ी है। गौर करने की बात है, साल 1991 के बाद से दुनिया में शोध के क्षेत्र में परस्पर सहयोग की बुनियाद मजबूत हुई थी। विज्ञान शोध को समर्पित पत्रिका नेचर की एक रिपोर्ट के अनुसार, कुल शोध परियोजनाओं में से एक चौथाई अंतरराष्ट्रीय सहयोग-समन्वय से ही चल रही थीं। देशों के बीच परस्पर आना-जाना आसान हुआ था। भूमंडलीकरण से शोध या विज्ञान के लिए आबंटित राशि का व्यापक उपयोग हो रहा था। इसका फायदा विज्ञान, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के साथ-साथ समाज को भी हो रहा था, लेकिन कोरोना ने जीवन व पूरे कार्य-व्यापार को उलट-पलटकर रख दिया है। कोरोना से पहले के तीस वर्ष में शोध ने देशों की सीमाओं को बेकार साबित कर दिया था। मिलकर किए गए शोध या शोध पत्रों की संख्या में विकसित देशों ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी में 10 गुना वृद्धि हुई थी, जबकि ब्राजील, रूस, भारत, चीन में यह वृद्धि 20 गुना थी। दिलचस्प बात है कि अमेरिका और चीन के बीच विश्व में शोध सहयोग सर्वाधिक था। दोनों देश किसी भी अन्य देश की तुलना में एक दूसरे को ज्यादा साझीदार बनाते थे, पर कोरोना के समय दोनों देशों के बीच जो तनाव बढ़ा है, उसने शोध विकास पर गहरा प्रहार किया है। शोधकर्ता अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहे हैं कि संकट काल में शोध-सहयोग और शोध उत्पादकता प्रभावित न हो, लेकिन खास तौर पर विकासशील देशों को बड़ा झटका लगा है। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी की शोधकर्ता कैरोलीन वगनेर बताती हैं, '90 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान निजी रूप से वैज्ञानिकों के आमने-सामने आने पर ही शुरू होते हैं, पर यह काम अब मुश्किल व जोखिम भरा हो गया है। वर्चुअल माध्यमों का सहारा लेते हुए भी हमें मानना पडेगा कि वर्चुअल जुड़ाव कभी प्रत्यक्ष जुड़ाव की जगह नहीं ले सकता'। लगभग सभी वैज्ञानिक मानने लगे हैं कि वर्चुअल संपर्क ज्यादा जरूरी हो गया है। अब वे वैज्ञानिक ज्यादा फायदे में रहेंगे, जो मुखर होंगे। संकोच छोड़ आगे बढ़कर साझीदारी में अपने अनुसंधान को आगे बढ़ाने में ही भलाई है। कई शोधकर्ता इस समय का सदुपयोग अपने निजी अध्ययन को दुरुस्त करने के लिए भी कर रहे हैं, अपने पिछले काम या शोध में कमियां भी खोज रहे हैं। होमवर्क बढ़ गया है और जैसे ही कोरोना काबू में आएगा, वैज्ञानिकों का फील्डवर्क तेज हो जाएगा। कोई आश्चर्य नहीं, दुनिया के लोगों की निगाह अभी सिर्फ कोरोना की दवा पर टिकी है। दूसरे अनुसंधान ज्यादा ध्यान नहीं खींच पा रहे। दुनिया के ज्यादातर वैज्ञानिक मान रहे हैं कि शोध में कम से कम इस साल तेजी नहीं लौटेगी। विज्ञान की दुनिया का 'न्यू नॉर्मल' अभी दूर है।

देश भर में सभी जोखिम भरे रनवे के डिजाइन में बदलाव करना चाहिए

कोझिकोड विमान हादसे ने विमानन क्षेत्र को अपने ढांचे में सुधार करने के संकेत दिए हैं। यह सच है कि विमानन क्षेत्र में पिछले एक दशक में काफी सुधार हुआ है। फिर भी अनेक विकसित देशों के मुकाबले हमारा विमानन क्षेत्र अभी भी विश्वस्तरीय मानकों के अनुरूप नहीं हो पाया है। देश में दिल्ली और मुंबई जैसे गिनती के अंतरराष्ट्रीय स्तर के हवाईअड्डों को छोड़ दें, तो शेष की हालत दयनीय है। एविएशन सेक्टर में भारी संभावनाएं हैं।

इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की ओर से जारी साल 2018 की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के घरेलू उड्डयन बाजार ने लगातार चौथे साल 18.6 प्रतिशत की सबसे तेज वृद्धि दर हासिल की है। फिर भी हमारा एविएशन सेक्टर अविश्वसनीय है। आखिर क्यों? बीते एक दशक से देश में हवाई यात्रियों में भारी वृद्धि होने के बाद भी टियर-2 और टियर-3 श्रेणी के बहुत से शहरों को हवाई रूटों से नहीं जोड़ा गया। विमानन क्षेत्र आधुनिक तकनीकों से लैस होने के बावजूद व्यापक कमियों का शिकार होता नजर आ रहा है। कोझिकोड जैसे हादसे उसी का परिणाम हैं। इससे भारतीय विमानन नेटवर्क को सतर्क हो जाना चाहिए। घटना के संभावित पहलुओं की पहचान कर उन्हें दुरुस्त करना चाहिए। इस हादसे की शुरूआती रिपोर्ट बताती है कि रनवे छोटा होने के कारण हादसा हुआ। एयरपोर्ट का रनवे अगर लंबा होता, तो हादसा नहीं होता। हालांकि कई वर्षों से रनवे को लंबा करने की मांग हो भी रही है। मालूम हो कि कोझिकोड एयरपोर्ट का रनवे

8,800 फुट लंबा है। विमानन क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि छोटे रनवे पर बारिश में हवाई जहाज की लैंडिंग कराना बहुत जोखिम भरा काम होता है। बारिश में रनवे पर पानी जमा होने या उसके भीग जाने पर हवाई जहाज के पहियों के फिसलने की आशंका बढ़ जाती है। करीब एक दशक पहले ही मंगलुरु के एयरपोर्ट पर भी कुछ ऐसा ही हादसा हुआ था। एयर इंडिया का एक विमान दुबई से आते वक्त रनवे को पार करते हुए पास की पहाड़ियों में जा गिरा था, जिसमें 158 लोगों की मौत हुई थी। उस हादसे से भी एयरपोर्ट अथॉरिटी ने कोई सबक नहीं सीखा।

मंगलुरु और कोझिकोड के हादसों के बाद भी अगर कोई सतर्कता नहीं दिखाई गई, तो ऐसे दर्दनाक हादसों की पुनरावृत्ति होती रहेगी और हवाई यात्री असमय मारे जाते रहेंगे। केंद्र सरकार ने हाल ही में देश भर के एयरपोर्ट की सुरक्षा की समीक्षा की थी। रिपोर्ट में सामने आया था कि कई ऐसे रनवे हैं जो बोईंग विमानों का भार डोलने के लायक नहीं हैं। बोईंग विमानों का वजन 70 से 100 टन तक होता है। लैंडिंग के समय तेजी से इतना भार जमीन पर पड़ता है जिस कारण रनवे बेहद मजबूत बनाए रखना होता है। बारिश में छोटे रनवे बड़ी परेशानी का सबब बनते हैं। खराब मौसम में जब ये विमान लैंड करते हैं, तो रनवे पर उनके टायरों की रबड़ उतर जाती हैं, जिससे ब्रेक लगाते समय विमानों के फिसलने की आशंका बढ़ जाती है। यदि रनवे की लंबाई पर्याप्त हो तो पायलट वायुयान पर अपना नियंत्रण कायम रखने में कामयाब रहता है।

कोझिकोड एयरपोर्ट के आसपास बहुत ज्यादा हरियाली है, इसलिए वहां अन्य हवाईअड्डों के मुकाबले दृश्यता कुछ कम रहती है। ऐसे में हादसे की आशंका हमेशा बनी रहती है। इतना सबकुछ जानने के बाद एयरपोर्ट प्रबंधन आंख मूंद कर बैठा रहता है, अगले हादसे का इंतजार करता रहता है और देखते-देखते हादसा हो भी जाता है। ऐसे में हमें उन हवाईअड्डों से सीखना चाहिए जिनका निर्माण व्यापक निवेश करके किया तो गया, लेकिन तकनीकी मानकों पर खरा नहीं उतरने के कारण वहां से हवाई सेवाओं पर रोक लगा दी गई। सिक्किम में पाक्योंग एयरपोर्ट का 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उद्घाटन किया, लेकिन कुछ माह के बाद ही इसमें कई तकनीकी खामियां सामने आईं, जिसके बाद यहां से उड़ानों के संचालन को सीमित कर दिया गया। ऐसे में होना तो यह चाहिए था कि कम से कम इसी बहाने देश के अन्य सभी जोखिम वाले हवाईअड्डों की पहचान की जाती और उनकी कमियों को दूर किया जाता। संबंधित विशेषज्ञों द्वारा अक्सर ही यह कहा जाता है कि भारत में विमानन सेवाओं के अभी व्यापक विस्तार की संभावनाएं हैं। खासकर गोरखपुर, वाराणसी, प्रयागराज, आगरा, रांची, दरभंगा, पिथौरागढ़, पंतनगर, बरेली और जबलपुर समेत देश के पूर्वोत्तर राज्यों के टीयर-2 और टीयर-3 के अनेक शहरों में इसके विस्तार की असीम संभावनाएं हैं। लेकिन यदि इस क्षेत्र में तकनीकी मानकों को दरकिनार किया गया और इस तरह से हादसे होते रहे जिसमें यह स्पष्ट हो कि हादसे की वजह रनवे के डिजाइन में ही खामी है, तो फिर हवाई यात्रियों के मन भी अनेक आशंकाएं पैदा हो सकती हैं। हवाई हादसे अब रेल हादसों की तरह आम होते जा रहे हैं। वैसे देखा जाए तो पिछले दो-तीन वर्षों में रेलवे ने इस दिशा में पर्याप्त प्रगति की है और हादसों की संख्या में बेहद कमी आई है। विमान दुर्घटनाओं के बाद जब जिम्मेदारी लेने की बात आती है तो सरकारें यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लेती हैं कि इसमें निजी विमान कंपनियों की भी हिस्सेदारी है। ऐसे में हवाईजहाज संचालन से संबद्ध सभी एजेंसियों को एकीकृत रूप से तमाम समस्याओं की पहचान करनी होगी और समय रहते उनका समाधान तलाशना होगा।

सरकारी बैंकों को नया जीवन देने की कोशिश

बैंकिंग सेक्टर किसी भी देश की आर्थिक ही नहीं, सामाजिक प्रगति की भी रीढ़ होता है। यह एकमात्र मानदंड था, जिस पर बैंकों को असफल होता देख 19 जुलाई 1969 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने एक झटके में देश के 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था। ये बैंक उस समय देश के कुल कर्ज वितरण में 85 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखते थे, लेकिन सरकार को लग रहा था कि यह सारा कर्ज केवल बड़े कारोबारी घरानों को जा रहा था और प्राथमिक क्षेत्र पूंजी से वंचित रह जा रहे थे। सरकार को ऐसा लगने की ठोस वजह थी। वर्ष 1951 से 1967 के बीच बैंकों से उद्योग जगत को मिलने वाला कर्ज 34 से बढ़कर 64 प्रतिशत हो गया था, लेकिन कृषि को मिलने वाला कर्ज दो प्रतिशत से नीचे बना रहा। 11 साल बाद 1980 में राष्ट्रीयकरण की इस प्रक्रिया को और विस्तार देकर उसमें छह और बैंकों को शामिल कर लिया गया। इस तरह भारतीय बैंकिंग सेक्टर पूरी तरह

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) पर आश्रित हो गया। इससे देश का बैंकिंग सेक्टर बुनियादी तौर पर कई नई प्रवृत्तियों से ग्रस्त हो गया। प्रतिस्पर्धा खत्म हो गई, तकनीक को लेकर उदासीनता छा गई और रेगुलेटरी निगरानी में शिथिलता आ गई। इन घटनाओं से बैंकिंग सेक्टर में गवर्नेंस की गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हुई। ढीले-ढाले रेगुलेटरी परिवेश के बीच दो दर्जन से ज्यादा पीएसबी सत्ताधारी नेताओं और बड़े कॉरपोरेट के बीच भ्रष्ट गठबंधन की पौध सींचने के साधन बन गए। कई ऐसे उदाहरण सामने आए जब सरकारी बैंकों के प्रमुखों ने किसी प्रभावशाली नेता के फोन पर दिए निर्देशों का पालन करते हुए किसी कॉरपोरेट को हजारों करोड़ रुपये का कर्ज दे दिया। कई बार तो एक पीएसबी से कर्ज पाने वाले उद्योगपति पहले से ही किसी दूसरे बैंक से सैकड़ों-हजारों करोड़ रुपये डकार कर बैठे थे। विजय माल्या और नीरव मोदी तो केवल इक्का-दुक्का ऐसे हाई प्रोफाइल मामले हैं, जिन्हें मीडिया में ज्यादा तवज्जो मिली, लेकिन ऐसे दर्जनों मामले बाकायदा रिकॉर्ड पर हैं। इनके अलावा यूपीए के दूसरे कार्यकाल (2009-14) के दौरान हुए कई महाघोटालों ने बैंकिंग सेक्टर की कमर तोड़ने में बड़ी भूमिका निभाई। कोयला घोटाले और टेलीकॉम घोटाले में हजारों करोड़ रुपये का कर्ज लेकर बोली लगाने वाले कई कंपनियों के लाइसेंस रद हो गए, जिससे कर्ज की रकम बैंकों के डूबे कर्ज यानी एनपीए के खाते में चली गई।

म्हाडा के सीईओ मिलिंद और अन्य आईएएस अधिकारियों के तबादले

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र में राज्य सरकार ने सोमवार को कई आईएएस अधिकारियों के तबादले किए, जिनमें महाराष्ट्र आवास एवं क्षेत्र विकास प्राधिकरण (म्हाडा) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एवं उपाध्यक्ष मिलिंद म्हैसकर भी शामिल हैं। एक सरकारी आदेश के मुताबिक, म्हैसकर वन विभाग के प्रधान सचिव का पदभार ग्रहण करेंगे। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के सचिव संजय खंदारे को महाराष्ट्र स्टेट पावर जेनरेशन कंपनी लिमिटेड का नया अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नियुक्त किया गया है। औरंगाबाद के जिलाधिकारी उदय चौधरी को मंत्रालय में बतौर उप सचिव (मुख्य सचिव कार्यालय) तैनात किया गया है। इसी तरह, जलस्वराज परियोजना प्रबंधक (नवी मुंबई) एए गुलहाने का तबादला चंद्रपुर जिलाधिकारी के पद पर किया गया है।

'एनसीपी के विधायकों के बीजेपी में जाने की खबर अफवाह'

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र में एक बार फिर से सियासत गरम हो गई है। इस बार मसला एनसीपी और बीजेपी के दरम्यान है। 12 एनसीपी विधायकों के बीजेपी में जाने की चर्चा के बीच अब पार्टी का इस पर बयान आया है। एनसीपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और कैबिनेट मंत्री नवाब मलिक ने ट्वीट कर यह बताया है कि पार्टी के 12 विधायक बीजेपी में शामिल होने वाले हैं, यह खबर पूरी तरह से अफवाह है और इसमें कोई भी सच्चाई नहीं है। मलिक ने यह भी कहा कि विधानसभा चुनाव के

पहले जो लोग एनसीपी छोड़कर बीजेपी में गए थे, वे भी वापस आने की तैयारी कर रहे हैं। हालांकि इस मामले में पार्टी ने अभी तक कोई फैसला नहीं लिया है। पार्टी जल्द ही फैसला लेकर सभी लोगों को सूचित करेगी।

बीजेपी की सफाई

नवाब मलिक के ट्वीट पर जवाब देते हुए बीजेपी प्रवक्ता केशव उपाध्ये ने कहा कि यह स्पष्ट है कि महाविकास अघाड़ी के तीनों घटक दलों में कोई भी तालमेल नहीं है। हर कोई एक दूसरे की टांग खींचने में लगा हुआ है। जहां तक बात बीजेपी की है तो बीजेपी को सरकार गिराने में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसलिए बीजेपी पर यह आरोप बेबुनियाद है।

पहले भी टूट भी अटकलें: विधायकों की एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने की खबरें बीते कुछ महीनों से अक्सर सुर्खियों में आ रही है। इसके पहले भी कांग्रेस के नेता और मंत्री यशोमति ठाकुर ने स्पष्टीकरण दिया था कि हमारे कोई भी विधायक बीजेपी के संपर्क में नहीं है और जो विधायक कांग्रेस को छोड़कर बीजेपी में गए थे वह भी हमारे संपर्क में है। ऐसे में बीजेपी पहले खुद के विधायकों को संभाले। महाराष्ट्र में जब से महाविकास अघाड़ी की सरकार बनी है और उद्धव ठाकरे सरकार के मुखिया तब से इस तरह की खबरें लगातार सामने आ रही हैं। हालांकि बाद में अक्सर विपक्ष को मुंह की खानी पड़ी है।

एआई-आधारित कोरोना जांच के प्रभाव के आकलन के लिए अध्ययन करेगा बीएमसी

मुंबई। बृहन्नमुंबई नगर निगम (बीएमसी) ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित उस तकनीक के प्रभाव का आकलन करने के लिए अध्ययन कराने का फैसला किया है जिसके बारे में दावा किया गया है कि वह आधे मिनट के भीतर कोरोना वायरस संक्रमण का पता लगा सकता है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। दावा किया गया है कि 'नॉन-इनवेसिव' आवाज नमूना विश्लेषण में मरीजों की ध्वनि तरंगों का अध्ययन कर संक्रमण का पता लगाया जा सकता है। बीएमसी के अतिरिक्त आयुक्त सुरेश ककानी ने कहा, यह तकनीक अभी शुरूआती चरण में है और इसके परिणामों को जांच करने की जरूरत है। इसलिए हमने यह अध्ययन कराने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि इस प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं है। एक अन्य अधिकारी ने कहा कि अन्य मौजूदा परीक्षणों की तुलना में यह पद्धति सस्ता है और 30 सेकंड के भीतर परिणाम दे सकता है। ककानी ने कहा कि अध्ययन उपनगरीय गोरेगांव के एक विशाल कोविड केंद्र में भर्ती 2,000 रोगियों पर किया जाएगा। अधिकारियों को उम्मीद है कि यदि प्रौद्योगिकी सफल साबित होती है तो हवाई अड्डों, मॉल, थिएटर, बस स्टैंड और रेलवे स्टेशनों जैसे भीड़भाड़ वाले स्थानों पर बिना लक्षण वाले लोगों का पता लगाने में यह उपयोगी होगा।

सुशांत केस में बड़ा दावा: मुंबई पुलिस के सूत्रों ने बताया...

मौत से कुछ दिन पहले सुशांत की रिया के साथ मारपीट हुई थी

मुंबई। सुशांत सिंह राजपूत डेथ केस में अभिनेता और उनकी गर्लफ्रेंड रिया चक्रवर्ती को लेकर नया खुलासा हुआ है। मुंबई पुलिस के सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, मौत से कुछ दिन पहले सुशांत का रिया से बहुत बड़ा झगड़ा हुआ था। इस दौरान दोनों के बीच मारपीट भी हुई थी, जिसके बाद रिया घर छोड़कर चली गई थीं और उन्होंने सुशांत का नंबर ब्लॉक कर दिया था। बताया जा रहा है कि दोनों के बीच यह झगड़ा एक-दूसरे के परिवार को लेकर हुआ था। कुछ दिनों पहले मुंबई पुलिस के कमिश्नर ने रिया और सुशांत के रिश्ते को लेकर बात की थी। उन्होंने कहा था कि रिया 8 जून को सुशांत का घर छोड़कर चली गई थीं। क्योंकि वे खुद डिप्रेशन में थीं और उनकी मानसिक हालत ठीक नहीं थी। उनके मुताबिक, रिया से दो बार हुई पूछताछ में यह बात निकलकर सामने आई थी कि सुशांत के साथ उनके रिश्ते में दिक्कत चल रही थी। रिया ने पुलिस को सुशांत की मानसिक बीमारी के बारे में बताया था और

उनके प्रिस्क्रिप्शन भी दिए थे। पिछले दिनों सुशांत सिंह राजपूत का कॉल डिटेल रिकॉर्ड सामने आया था। इसके मुताबिक, 8 जून से 14 जून को अभिनेता के सुसाइड करने तक रिया से उनकी एक बार भी बात नहीं हुई थी। यहां तक कि दोनों के बीच किसी तरह का मैसेज भी एक्सचेंज नहीं हुआ था। 8 से 14 जून के बीच सुशांत ने सिर्फ दो आउटगोइंग कॉल लगाए थे। दोनों उनकी बहनों के लिए थे। वहीं, इस दौरान उनके कुल 9 इनकमिंग कॉल थे। करीब 10 दिन पहले बिहार पुलिस से पूछताछ में सुशांत की बहन मीतू ने भी अपने भाई और रिया के बीच हुए झगड़े की बात कही थी। मीतू ने बताया था कि 8 जून को रिया ने उन्हें कॉल करके कहा था कि उनकी सुशांत से लड़ाई हो गई है। इसके बाद वे सुशांत से मिलने उनके बांद्रा स्थित घर गईं और उनके साथ कुछ दिन रहीं। सुशांत ने मीतू को बताया था कि रिया से उनकी लड़ाई हुई, जिसके बाद वह घर छोड़कर चली गई। इस दौरान रिया अपने साथ सुशांत का भी कुछ सामान ले गई थीं। रिया ने जाते वक्त यह भी कहा कि शायद वे अब कभी नहीं लौटेंगी। मीतू के मुताबिक, वे 8 से 12 जून तक सुशांत के साथ रुकी थीं। लेकिन बच्चे छोटे होने की वजह से उन्हें 12 जून को अपने घर वापस लौटना पड़ा था।

(पृष्ठ 1 का शेष)

1000 करोड़ का मुंबई में ड्रग्स बरामद

डायरेक्टोरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलीजेंस (डीआरआई) और कस्टम विभाग के अधिकारियों ने जब ड्रग्स को पकड़ा तो तस्करों ने इसे आयुर्वेदिक दवा बताया। जब अधिकारियों ने इसे छिपाकर लाने के बारे में सवाल किया तो तस्करों ने बताया कि दवा खराब न हो। इसलिए ऐसा किया गया। हालांकि, जब अधिकारियों ने जांच की और सख्ती से पूछताछ की तो तस्करों ने ड्रग्स का खुलासा कर दिया। इसके बाद कार्रवाई करते हुए ड्रग्स के इम्पोर्ट के कागजात तैयार करने वाले दो कस्टम एजेंट को मुंबई से, एक इंपोर्टर और फाइनेंसर को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया। दोनों को मुंबई लाया जा रहा है। कस्टम एजेंट मीनानाथ बोडके और कोंडीभाऊ पांडुरंग गुंजाल को गिरफ्तारी के बाद स्थानीय कोर्ट में पेश किया। उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। बोडके ने जांच एजेंसियों को बताया कि मोहम्मद नुमान नाम के व्यक्ति ने उसे दिल्ली के इंपोर्टर सुरेश भाटिया से मिलवाया था। पूछताछ में पता चला कि भाटिया को इससे पहले भी ड्रग तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया जा चुका है।

ठंडा पड़ा नेपाल का मिजाज?

काठमांडू पोस्ट की एक रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले कुछ सप्ताह में विदेश मंत्री प्रदीप ज्ञवाली ने पूर्व मंत्रियों, कूटनीतिज्ञों और विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा की है। ज्ञवाली ने भी इस बात की पुष्टि की है कि भारत के साथ बातचीत के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। ज्ञवाली ने काठमांडू पोस्ट से कहा, भारत के साथ बातचीत के चैनल खोलने के लिए काठमांडू और नई दिल्ली में प्रयास किए जा रहे हैं। हालांकि, परिणाम आने में कुछ समय लगेगा। खबर के मुताबिक, भारत के साथ बातचीत शुरू करने के तरीके पर कुछ ठोस नहीं हो पाया है। नेपाल के द्वारा भारतीय इलाकों लिंपियाधुरा, लिपुलेख और कालापानी को उसके नए राजनीतिक नक्शों में शामिल किए जाने के बाद से भारत ने अपने तेवर कड़े कर लिए हैं और बातचीत में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहा है। हालांकि, दोनों देश कह चुके हैं कि वे मुद्दे का समाधान बातचीत के जरिए चाहते हैं, लेकिन ओली की भारत विरोधी बयानबाजी की वजह से माहौल नहीं बन पा रहा है। सरकार की नाकामियों की वजह से जनता और अपनी पार्टी में घिर चुके प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने यहां तक कह दिया कि उनके खिलाफ नई दिल्ली में साजिश रची जा रही है। इसके बाद वह कई बार भगवान राम के नेपाली होने और भारत में नकली अयोध्या जैसे बयान देकर आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। हालांकि, नेपाल में अधिकतर लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि उसका हित और भविष्य भारत के साथ चलने में ही है। चीन ने जिस तरह एशिया के कई छोटे मुल्कों को कर्जदार बनाकर जाल में फंसा लिया है, उससे नेपाल भी कहीं ना कहीं सशंकित जरूर है।

बॉलीवुड सितारों को मिली क्राइम की सजा: किसी ने किया रेप तो किसी ने की करोड़ों की हेरा-फेरी

संवाददाता

सुशांत सिंह राजपूत के पिता केके सिंह ने एक्टर की गर्लफ्रेंड रिया चक्रवर्ती के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने की एफआईआर दर्ज कराई है। रिया पर सुशांत के 15 करोड़ रुपए हड़पने के आरोप भी हैं जिनकी जांच ईडी कर रही है। इसके साथ ही रिया पर आईपीसी की धारा 306, 341, 342, 380, 406 और 420 के तहत एफआईआर दर्ज है और अगर आरोप साबित हुए तो रिया को 10 साल तक जेल में रहना पड़ सकता है। लेकिन, रिया अकेली ऐसी सेलेब नहीं जिन पर कई गंभीर आरोप हैं। उनसे पहले भी कई सेलेब्स गंभीर अपराधों में फंसकर जेल की हवा खा चुके हैं। इनमें धोखाधड़ी, रेप, गैर-इरादतन हत्या जैसे कई अपराध शामिल हैं।

जब गंभीर अपराधों में दोषी पाए जाने पर सेलेब्स ने खाई जेल की हवा

प्रेरणा अरोड़ा

'पैडमैन' और 'परी' जैसी फिल्मों की प्रोड्यूसर प्रेरणा अरोड़ा करीब 8 महीने जेल में रहकर पिछले साल ही बाहर आई थीं। उन्हें मुंबई इकोनॉमिक ऑफेंस विंग (ईओडब्ल्यू) ने 2019 में प्रोड्यूसर वाशु भगनानी से 3.16 करोड़ रुपए के फ्रॉड केस में उन्हें अरेस्ट किया था।

संजय दत्त

1993 में मुंबई में हुए ब्लास्ट मामले में संजय दत्त को टाडा (प्रिवेंशन एक्ट) के तहत अवैध रूप से हथियार रखने के दोषी पाए गए। 2013 में उन्हें 5 साल की सजा हुई। अच्छे व्यवहार के चलते संजय दत्त 25 फरवरी 2016 को पुणे की यरवदा जेल से रिहा हो गए थे।

सलमान खान

1998 में सलमान खान काला हिरण शिकार मामले में फंसे थे। जिसके बाद अप्रैल 2018 में 5 साल की सजा सुनाई गई। जोधपुर कोर्ट से मिली सजा का एक ही दिन जेल में गुजारने के बाद सलमान खान जमानत पर रिहा हो गए। सलमान पर हिट एंड रन, आर्म्स एक्ट जैसे केस भी चलाए गए, जिनमें वे बरी हो चुके हैं।

मोनिका बेदी

कई फिल्मों में काम कर चुकी मोनिका बेदी को गैंगस्टर अबू सलेम के साथ 2006 में फर्जी अवैध दस्तावेजों के साथ पुर्तगाल में दाखिल होने का दोषी पाया गया। लिस्बन शहर से पकड़ी गई मोनिका को 4 साल की सजा मिली। मोनिका 2010 में रिहा हो चुकी हैं, और वापस फिल्म और टीवी में काम करने की कोशिश में हैं। उन्होंने कुछ रीजनल फिल्मों के अलावा 2013-14 में आए सीरियल 'सरस्वतीचंद्र' में वैम्प की भूमिका अदा की थी।

सूरज पंचोली

सूरज पर गर्लफ्रेंड जिया खान को आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज हुआ था जिसके बाद उन्होंने लंबा समय जेल में बिताया था। जिया ने 3 जून 2013 में अपने मुंबई स्थित फ्लैट में सुसाइड कर लिया था जिसके बाद पुलिस ने उनके लिव इन ब्वॉयफ्रेंड सूरज पंचोली को गिरफ्तार कर लिया था। सूरज को तकरीबन एक महीने बाद मुंबई हाई कोर्ट ने जमानत दे दी थी।

फरदीन खान

5 मई 2001 में कोकीन रखने के लिए फरदीन खान को गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने जेल में 5 दिन बिताए। लेकिन इसके बाद उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया। फरदीन को जेल से सीधा रिहेबलिटेशन सेंटर भेजा गया था।

शाइनी आहूजा

'लाइफ इन ए मेट्रो', 'गैंगस्टर' जैसी फिल्मों में काम कर चुके शाइनी को 2009 में नौकरानी से रेप के मामले में गिरफ्तार कर लिया गया था। उनपर 2008 में घर में काम करने वाली 20 साल की नौकरानी ने रेप के आरोप लगाए थे। आरोप साबित होने पर उन्हें 7 साल की सजा हुई थी। तीन साल जेल में काटने के बाद शाइनी जमानत पर रिहा भी हो गए थे लेकिन उनका फिल्मी करियर पूरी तरह बर्बाद हो गया था।

राजपाल यादव

राजपाल यादव को नवंबर 2018 में 5 करोड़ का कर्ज ना चुकाने के कारण जेल हो गई थी। राजपाल और उनकी पत्नी राधा ने 2010 में बतौर निर्देशक पहली फिल्म 'अता पता लापता' बनाने के लिए 5 करोड़ रुपए का कर्ज लिया था। इस मामले में दिल्ली की एक कंपनी मुरली प्रोजेक्ट्स ने राजपाल की कंपनी श्री नौरंग गोदावरी एंटरटेनमेंट के खिलाफ कर्ज नहीं चुकाने का केस दर्ज कराया था। आरोप साबित होने पर राजपाल तीन महीने तक जेल में रहे थे।

सुब्रमण्यम स्वामी ने उठाया बड़ा सवाल

शरीर पीला पड़ गया था पैर मुड़े थे, तीन घंटे में होने वाला पोस्टमॉर्टम महज 90 मिनट में कैसे हो गया

मुंबई। सुशांत की मौत पर एक और नया खुलासा सामने आया है। सीबीआई जांच, पीएमओ से हस्तक्षेप की मांग और वकील ईशकरण भंडारी को नियुक्त करने वाले सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने एक ट्वीट के जरिए सुशांत की पोस्टमार्टम रिपोर्ट और डॉ. कूपर हॉस्पिटल की टीम से भी पूछताछ करने की मांग की है। स्वामी का कहना है कि सुशांत के शव को अस्पताल ले जाने वाले एम्बुलेंस कर्मचारियों के अनुसार उनका पैर टखने के नीचे मुड़ गया था जैसे कि वह टूट गया हो। खबर के अनुसार सुशांत का पोस्टमॉर्टम 90 मिनट में हो गया था। जांच करने के बाद उनका विसरा सुरक्षित रखा गया था। आम तौर पर एक पोस्टमॉर्टम में 2 से 3 घंटे लगते हैं। लेकिन सुशांत के केस में डॉक्टर्स ने कहा था कि इस तरह की कोई लिमिट तय नहीं है। इतना ही नहीं मुंबई पुलिस के अधिकारियों के इशारे पर सुशांत का पोस्टमॉर्टम सूर्यास्त के बाद किया गया। सुशांत की बॉडी ले जाने वाले एम्बुलेंस ड्राइवर ने उनकी मौत के 56 दिन बात बयान दिया कि सुशांत का शरीर पीला पड़ गया था। उनके पैर मुड़े हुए थे और उनके पैरों पर निशान थे। ड्राइवर ने बताया कि बॉडी को देखकर सब कुछ संदिहास्पद लग रहा था। आत्महत्या के मामले में शरीर का पीला पड़ना सामान्य बात नहीं है। न ही इस तरह के मामलों में पैर मुड़ते हैं।

ये थी कूपर के डॉक्टर्स की रिपोर्ट

सुशांत की फाइनल पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट को 5 डॉक्टर्स की टीम ने तैयार किया था। रिपोर्ट में कहा गया था कि सुशांत की मौत फांसी लगाने के बाद दम घुटने से हुई है। यह सवाल खड़े हो रहे थे कि किसी ने सुशांत को गला दबाकर मारा है। पर जांच में ऐसा कुछ नहीं आया था। सुशांत के शरीर पर भी कोई स्ट्रगलिंग मार्क्स (जोर जबरदस्ती के निशान) नहीं मिले और न ही नाखून से कुछ मिला था।

ग्लोबल मार्केट में छाने की तैयारी

चीन के दबदबे वाले उत्पादों की मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देगा भारत, बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने की योजना

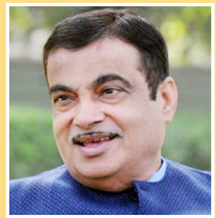

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवार को कहा कि केंद्र सरकार कुछ उत्पादों की मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने की योजना बना रही है। ये वो उत्पादों होंगे जिनमें ग्लोबल मार्केट में चीन का दबदबा है और उसके पास एक बड़ा शेयर है। सरकार के आयात को घटाने और निर्यात को बढ़ावा देने के प्रयासों के तहत इस योजना को अंजाम दिया जाएगा। एक वर्चुअल कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए एमएसएमई मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि सरकार का लक्ष्य पहले से निर्धारित क्षेत्रों के लिए विदेशी निवेश आकर्षित करना है। इसके अलावा जॉइंट वेंचर को प्रमोट किया जाएगा और स्थानीय कारोबारियों की मदद की जाएगी। इससे भारत को ग्लोबल मार्केट में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद मिलेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जिन सेक्टर्स में चीन की बड़ी हिस्सेदारी है, वहां भारत के लिए काफी अवसर हैं। केंद्र सरकार उद्योगों को बढ़ावा देने और निर्यात बढ़ाने के लिए कई प्रयास कर रही है। इसी दिशा में सरकार ने पिछले महीने इलेक्ट्रॉनिक्स, मेडिकल डिवाइस और फार्मास्युटिकल्स उत्पादों की मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीम लॉन्च की थी। इसके अलावा सरकार ने चीनी उत्पादों के आयात पर भी प्रतिबंध लगाया है।

एमपीएससी टॉपर मो. शाहिद का किया सत्कार

मुस्लिम स्टूडेंट्स फेडरेशन (एमएसएफ) शेर ए हिंद टिपु सुल्तान संघठन, मुस्लिम लिग, जमियत की और से मो. शाहिद मो. अय्यूब (दर्वापुर) एमपीएससी एक्जाम मे फर्स्ट रैंक मे कामियाब होने पर सत्कार किया गया। 6 अक्टूबर और 3 नवंबर 2020 को हुए एमपीएससी एक्जाम महाराष्ट्र में टॉप रैंक मे मो. शाहिद ने नुमाया मुकाम हासिल किया सेल टेक्स असिस्टन्स की पदवी हासिल कर गरीब परिवार और गाओ दयार्पुर इसी के साथ अमरावती शहर का नाम रोशन किया उर्दू मेडियम से 12 वीं तक की शिक्षा हासिल की और और आगे की पढाई मराठी मेडियम से करके आज मो. शाहिद ने एमपीएससी में टॉप किया आगे अल्लाह ने चाहा तो मै कलेक्टर की पदवी हासिल करूँगा (मो. शाहिद) इसी कामियाबी को देखते हुए इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के महाराष्ट्र अध्यक्ष सय्यद अफ्सर अली साहेब, मुस्लिम लीग शहर अध्यक्ष जनाब अब्दुल रहमान साहेब, जमीयत उलमा शहर अध्यक्ष जनाब मौलाना मुश्ताक साहेब, पसबाने उर्दू अदब के फिरोज खान, मास्टर सजील खान, सलमान खान एटीएस, मास्टर अतीक अहमद, इरशाद अहमद इन सभी ने उनके घर जाके सत्कार किया और हौसला बड़ाया और आगे अल्लाह उन्हें उनके मकसद मे कामयाबी दे उस के लिए दुआ की।

कांग्रेस के 'कॉकपिट' में लौटे पायलट

रंग लाई राहुल-प्रियंका से मुलाकात

संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में सियासी हालात तेजी से बदल रहे हैं। गहलोत सरकार से बगावती तेवर अख्तियार करने वाले सचिन पायलट ने दिल्ली में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी से मुलाकात की। वहीं, पायलट समर्थक विधायक भंवरलाल शर्मा भी सोमवार की शाम मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मिलने पहुंचे। मुख्यमंत्री गहलोत से मुलाकात के बाद पायलट समर्थक विधायक भंवरलाल ने बातचीत को सकारात्मक बताया और कहा कि सरकार सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि सरकार को कोई खतरा नहीं है। भंवरलाल शर्मा ने कहा कि पार्टी एक परिवार है और अशोक गहलोत उसके मुखिया। मेरी अशोक गहलोत से नहीं, मुख्यमंत्री से क्षेत्र के मुद्दों को लेकर नाराजगी थी। एक दो दिन में सब ठीक हो जाएगा। पायलट समर्थक विधायक ने कहा कि जब परिवार में कोई नाराज होता है तो वो खाना नहीं खाता। हमने एक महीने तक नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि अब नाराजगी दूर हो गई है। भंवरलाल शर्मा ने कहा कि पार्टी अब जनता से किए गए वादे पूरा करेगी। उन्होंने सचिन पायलट के भविष्य के सवाल पर कहा कि वे राहुल गांधी से बातचीत कर रहे हैं। भंवरलाल ने खुद को स्वयंभू नेता बताया और कहा कि वे किसी के पीछे नहीं चलते। इतने दिन तक अपने खर्च पर ही रुके हुए थे। कांग्रेस विधायक ने सरकार गिराने की साजिश से जुड़े ऑडियो के संबंध में पूछे जाने पर कहा कि मुझे इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है। भंवरलाल ने कहा कि एक गजेंद्र सिंह को जानता हूं। मैं किसी शेखावत को नहीं जानता। उन्होंने कहा कि कोई ऑडियो नहीं है। यह झूठ था। मैं संजय जैन को नहीं जानता। वहीं, सूत्रों की मानें तो सरकार ने यह आश्वस्त किया है कि इस मामले की जांच बंद कर दी जाएगी और कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।

गौरतलब है कि सूबे की सियासत में भूचाल ला देने वाले ऑडियो कांड में भंवरलाल का नाम भी आया था। राजस्थान पुलिस के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप की टीम भंवरलाल से इस संबंध में पूछताछ करने के लिए हरियाणा के गुरुग्राम भी गई थी। एसओजी टीम उस होटल भी पहुंची थी, जहां भंवरलाल शर्मा के होने की जानकारी मिली थी। हालांकि, टीम को हरियाणा पुलिस ने होटल के बाहर ही रोक दिया था। बाद में जब राजस्थान से गई टीम को अंदर जाने दिया गया, तब भंवरलाल शर्मा वहां नहीं मिले थे।

एनडीए में फूट के संकेत

संवाददाता

पटना। लोक जन शक्ति पार्टी (लोजपा) एनडीए का हिस्सा है, लेकिन पिछले काफी समय से लोजपा अध्यक्ष चिराग पासवान बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ हमलावर हैं। अब उन्होंने यह संकेत दिया है कि लोजपा बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए से अलग रास्ता भी अपना सकती है। चिराग ने कहा है कि हमारी पार्टी बिहार की सभी 243 विधानसभा सीट पर अकेले चुनाव लड़ने के लिए तैयार है। बाढ़ और कोरोना के खतरे को देखते हुए चिराग ने विधानसभा चुनाव टालने की मांग की है। उन्होंने कहा कि यह वक्त चुनाव का नहीं है। मौजूदा परिस्थिति ऐसी नहीं है कि बिहार में चुनाव कराए जा सकें। चिराग ने कहा कि समाज के सभी वर्गों के बीच वर्चुअल रैली से नहीं पहुंचा जा सकता। समाज का पिछड़ा वर्ग अभी तकनीक से दूर है। उन्होंने कहा कि एनडीए की 3 पार्टियां अगर एक साथ चुनाव लड़ने जा रही हैं तो तीनों का एजेंडा भी अलग-अलग होगा। बिहार में अब किसी एक व्यक्ति का एजेंडा नहीं चलने वाला है। एनडीए को मिल बैठकर एक कॉमन मिनिमम प्रोग्राम बनाना होगा। वह भी चुनाव से पहले।

11 वीं के नामांकन में छात्रा-एससी, एसटी से नामांकन शुल्क लिए जाने के खिलाफ आइसा ने कालेज का किया घेराव

संवाददाता/जकी अहमद

समस्तीपुर। बिहार सरकार के आदेश के आलोक में 11वीं कक्षा में छात्र, छात्रा, एससी-एसटी आदि के सभी छात्रों को निःशुल्क नामांकन करने की मांग को लेकर जारी आइसा के आंदोलन के अगली कड़ी में सोमवार को पूर्व सूचनानुसार एलकेभीडी कालेज ताजपुर के प्रशासनिक भवन के सामने आइसा के कार्यकर्ताओं ने जमकर प्रदर्शन किया। मांगों से संबंधित नारे लिखे तख्तियां, झंडे, बैनर लेकर कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी किया। बुलावे पर छात्रों का एक दल प्रिंसिपल के नाम संबोधित स्मार-पत्र

मौके पर तैनात कालेज स्टाप को सौपकर मांग यथाशीघ्र पूरा करने अन्यथा तालाबंदी के साथ सड़क जाम आंदोलन चलाने की घोषणा की प्रदर्शन के दौरान एक सभा का आयोजन भी किया गया। अध्यक्षता कालेज अध्यक्ष मो0 जावेद ने किया। मौके पर मनीष कुमार, विकास कुमार, रोहित कुमार, मो0 एजाज, मो0 आरिफ रजा, मो0 आबिद, मो0 आफताब, मो0 नदीम अख्तर, मो0 जावेद अकरम आदि छत्रों ने धरना प्रदर्शन में भाग लिया। ईधर इनौस नेताओं ने भी सभा को संबोधित किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में मो0 जावेद ने कहा कि बिहार सरकार के आदेश को ठेंगा दिखाकर कालेज प्रशासन छात्रा, एससी-एसटी आदि से शुल्क ले रही हैं, प्रत्येक स्कूल एवं कालेज में अलग अलग नामांकन शुल्क लिया जा रहा है। कहीं 15 सौ रुपया से लेकर 2 हजार रुपया तक नामांकन के नाम पर शुल्क लिया जा रहा है, आइसा इसे बर्दाश्त नहीं करेगी।

बुलढाणा हलचल

पत्रकार संगठन की मांग, कोरोना संक्रमण से मृत पत्रकारों के परिवार को आर्थिक सहायता दें महाराष्ट्र सरकार

बुलढाणा। वर्तमान स्थिती में समुचे विश्वमे कोरोना संक्रमन कहर बरपा रहा है। इसी के चलते देशसमेत राज्यमेभी कोरोना संक्रमन बढ रहा है। कोरोना संक्रमन के कारण राज्यमे आजतक हजारो लोगों की मृत्यु हुयी है। कोरोना संक्रमन के दरम्यान अपने प्राणोंकी पर्वाह ना करते हुये कोरोना संक्रमन कि ताजा खबरे पाठकोतक पहुंचाने का कार्य विभिन्न अखबारोंके संवाददाता एक योध्दाओंकी तरह कर रहे है। यह कार्य करते हुये महाराष्ट्रके दो संवाददाताको कोरोना संक्रमन होनेसे उनकी मृत्यु हुयी। इससे उनके परिवारपर भीषण आर्थिरक विपदा आयी है। मृत पत्रकारोंके परिवार कि स्थिती को ध्यान में रखकर उन्हे आर्थिरक सहायता प्रदान करने कि मॉग

महाराष्ट्र पत्रकार संगठनने मुख्यमंत्री उध्दव ठाकरे कि ओर एक ज्ञापन के माध्यमसे कि है। बता दे कि कोरोना संक्रमन के दरम्यान अपना कर्तव्य निभाते हुये देवराई निवासी संवाददाता स्व.संतोष भोसले व लातुर निवासी संवाददाता स्व. गंगाधर सोमवंशी कि कोरोना संक्रमित होने के कारण मृत्यू हुयी थी। कोरोना संक्रमन के समय कर्तव्य निभानेवाले पत्रकार का मृत्यु होने पर पचास लाख रुपए बिमा संरक्षन देनेकी घोषणा महाविकास आघाडी सरकारके स्वास्थमंत्री राजेश टोपे इन्होने कि थी। इस घोषणा के तहत कोरोनासे मृत हुये दोनो पत्रकारोंके परिवारको बिमा संरक्षण अंतर्गत आथिक सहायता प्रदान करने कि माँग महाराष्ट्र राज्य पत्रकार संघ, मुंबई, शाखा बुलढाणा जिलेकी ओरसे एक ज्ञापन के जरिये कि गयी है। इस माँगका ज्ञापन गुरुवार 6 अगस्त के दिन जिलाधिकारी के माध्यमसे मुख्यमंत्री को भेजा गया। ज्ञापन देतेसमय महाराष्ट्र राज्य पत्रकार संगठनके बुलढाणा जिलाध्यक्ष प्रा. सुभाष लहाने, विदभई विभागके उपाध्यक्ष भानुदास लकडे, बुलढाणा जिला सरचिटणीस पृथ्वीराज चव्हाण, जिला संगठक दिनेश मुडे उपस्थित थे।

कोरोनावायरस के दौर में शहर में मच्छरों की भरमार, नागरिकों ने बुलडाणा न.पा से फागिंग मशीन मुहिम चलाने की मांग की

बुलढाणा। देश के हर शहर गांव में कोरोनावायरस ने आतंक मचा रखा है बुलढाणा जिले में भी इस संक्रमित बीमारि ने लगभग 2 हजार लोगों को अपने चपेट में ले लिया है इसके चलते बुलढाणा शहर में भी इस संक्रमण का फैलाव तेजी से फैल रहा है इन दिनों बारिश का मौसम होने से शहर में चारों ओर गंदगी फैली हुई है इस गंदगी से मच्छरों की संख्या में वृद्धि हो गई है जिसके कारण नागरिकों को मच्छरों की भरमार से काफी परेशानी उठानी पड़ रही है पहले ही कोरोना संक्रमित बीमारी ने पैर पसारे हैं इसी के साथ ही मच्छरों की प्रकोप से बडने वाली बीमारियों जैसे कि डेंगू मलेरिया जानलेवा बीमारियां भी होने की संभावना नकारे नहीं जा सकती शहर के नागरिकों ने नगरपालिका के स्वास्थ्य विभाग से जवाबी तकरार देकर भी की इस ओर नजरअंदाज करते दिखाई दे रही है नागरिकों का यह भी कहना है कि अंधेरा होने पर घरों में मच्छरों के झुंड आना शुरू हो जाते है इस झुंड से घर के छोटे बच्चे बुजुर्ग परेशान

होते हैं जिनको बीमारी होने का खतरा बना हुआ है और शहर के जुबानी तक्रार करने वाले नागरिकों ने उस परिसर के नगरसेवक उसे भी जुबानी इस समस्या से अवगत कराया लेकिन फिर भी इस समस्या का हल नहीं निकाला शहर के नागरिकों ने नगरपालिका से मांग की है कि फॉगिंग मशीन दौरा फवारनी किया जाए ताकि नागरिकों को मच्छरों की झुंड से निजात मिल सके।

मच्छरों के काटने से इन बीमारियों के हो सकते हैं शिकार

डॉक्टर बताते हैं कि क्यूलेक्स नामक मच्छर के काटने से वेस्ट नाइल बीमारी होती है। इस बीमारी का लक्षण आमतौर पर दिखता नहीं है, फिर भी कई बार बुखार, डायरिया, जोड़ों में दर्द, मितली जैसे लक्षण दिख जाते हैं। इस बीमारी के बढ़ने से बच्चे मेनेन्जाइटिस व इंस्फ्लाइटिस जैसे ब्रेन इंफेक्शन के शिकार हो जाते हैं। मच्छरों के काटने से जीका बीमारी भी होती है। इनमें बीमारी का लक्षण आंखों का लाल होना, बुखार व जोड़ों में दर्द होना है। जीका वायरस शरीर में प्रवेश कर जाने पर न केवल गर्भवती महिला, बल्कि उसका गर्भस्थ शिशु भी इस बीमारी से संक्रमित हो सकता है। ला क्रॉस इंसेफेलाइटिस एक वायरस डिजीज होती है। इस वायरस का मच्छर आमतौर पर दिन के समय ही काटता है। इस बीमारी में कोई लक्षण नहीं दिखते हैं, लेकिन गंभीर होने पर बीमार कोमा में चला जाता है या फिर लकवा का शिकार हो जाता है। येलो फीवर बीमारी भी मच्छरों के काटने से होता है। कमर दर्द, उल्टी, सिर दर्द इस बीमारी के लक्षण हैं।

समस्तीपुर हलचल

समाजसेवी के द्वारा बाढ़ पीड़ितों को सुखा राशन वितरण किया गया

संवाददाता/जकी अहमद

समस्तीपुर। जिले के कल्याणपुर प्रखंड के जटमलपुर के तीरा पंचायत में लोजपा के युवा जिला अध्यक्ष रविशंकर सिंह एवं अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष मोहम्मद फिरोज के द्वारा बाढ़ प्रभावित लोगों को सुखा राशन चुड़ा, गुड़, मास्क, साबुन, मोमबत्ती, माचिस वितरण किया गया। मोहम्मद फिरोज ने बाढ़ वाले पानी में जाकर लोगों के घर तक राशन पहुंचाया। उन्होंने कहा की हमारे तरफ से हरसंभव प्रयास बाढ़ पीड़ितों को किया जाएगा। मौके पर प्रखंड अध्यक्ष मोहम्मद दुलारे, महिला मोर्चा प्रखंड अध्यक्ष विभा देवी, मनोज राय आदि मौजूद थे।

पृथ्वी दिवस पर किया पौधा रोपण

संवाददाता/जकी अहमद

समस्तीपुर। सोमवार को वारिसनगर विधानसभा के नागरबस्ती स्थित छात्र रालोसपा के जिला अध्यक्ष आफताब आलम के आवासीय परिसर में राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के द्वारा पृथ्वी दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के जिला अध्यक्ष अनंत कुशवाहा के नेतृत्व में चलाया गया। इस कार्यक्रम में लोगों से अपील की गई कि वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए लोगों को अपने आस पड़ोस में पेड़ लगाना चाहिए। जब वातावरण स्वच्छ होगा तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं। एक वृक्ष 10 पुत्र के समान होता है। इसलिए जिस तरह पुत्र के पालन पोषण में समय देते हैं उसी तरह वृक्ष के भी रोपने से लेकर के उसके बड़े होने तक समय समय पर ध्यान देने की जरूरत है। इसलिए हम लोगों से अपील करते हैं कि आप अपने आस पड़ोस में वृक्षारोपण अभियान जरूर चलाएं जिससे कि वातावरण स्वच्छ रहे। इस कार्यक्रम में छात्र प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष आफताब आलम, रंजीत कुमार, महताब आलम, महेश कुमार साह आदि मौजूद थे।

डॉ राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय ने एक और प्रगति की

संवाददाता/जकी अहमद

समस्तीपुर। कुलपति डा0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव के नेतृत्व में राजेन्द्र विश्वविद्यालय ने एक और प्रगति हासिल की है। केंद्रीय प्रभेद रिलीज कमिटी की 84 वीं बैठक में डा0 राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के तीन प्रभेदों का अधिसूचित किया गया है। धान के राजेंद्र सरस्वती प्रभेद, गन्ना के प्रभेद राजेन्द्र गन्ना 1 एवं राजेंद्र हाईब्रिड मक्का 4 को अधिसूचित किया गया है। राजेन्द्र सरस्वती धान की मध्यम उंचाई वाली अगात प्रजाति है जो लगभग 110 दिनों में तैयार हो जाती है। इसका चावल सुगंधित होता है। क्लाईमेट चेंज के अनुरूप यह एक अच्छी प्रजाति है। इसी तरह राजेंद्र हाईब्रिड मक्का 4 अधिक उपज देती है जबकि राजेंद्र गन्ना 1 में सुक्रोज की मात्रा अन्य प्रभेदो से अधिक है। प्रभेदो के अधिसूचित होने की जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डा0 श्रीवास्तव ने कहा की विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार भविष्य की समस्याओं को ध्यान में रखकर अनुसंधान कर रहे हैं जिसका अच्छा परिणाम आ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों के आय को दोगुनी करने के संकल्प को लेकर विश्वविद्यालय लगातार कार्य कर रहा है और इसमें अच्छे परिणाम आ रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डा0 मिथिलेश कुमार और सह निदेशक डा0 एनके सिंह को बधाई दी और सभी वैज्ञानिक से अनुसंधान में सक्रिय योगदान की अपील की।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

वर्कआउट के बाद प्रोटीन के लिए खाएं ये 6 फूड्स

फिट रहने और मसल्स बनाने के लिए लोग रोजाना जिम जाकर वर्कआउट और एक्सरसाइज करते हैं। मगर क्या आप जानते हैं कि शरीर को फिट रखने के लिए जिम जाना ही काफी नहीं है। इसके लिए प्रोटीन, मिनरल्स, विटामिन्स और फाइबर युक्त फूड्स का सेवन करना भी बहुत जरूरी है। वर्कआउट के बाद शरीर का प्रोटीन यूटीलाइज जाता है और इन्हें दोबारा रिपेयर करने के लिए प्रोटीन की बहुत जरूरत होती है। ऐसे में आज हम आपको प्रोटीन युक्त कुछ ऐसे फूड्स के बारे में बताएंगे, जिसे वर्कआउट के बाद खाने से आपको दोगुणा से ज्यादा फायदा मिलेगा।

1. दालों का सेवन

हाई प्रोटीन से भरपूर दालों का सेवन से एक्सरसाइज के कारण थकी हुई मांसपेशियों को नई जान देता है। इसलिए वर्कआउट के बाद हाई प्रोटीन, फाइबर, आयरन और पोटैशियम से भरपूर दालों का सेवन जरूर करें।

2. आर्गेनिक टोफू उत्पाद

अगर आप अपने शरीर को फिट रखना चाहते हैं तो वर्कआउट के बाद प्रोटीन के लिए टोफू का सेवन भी कर सकते हैं। शरीर में प्रोटीन के लिए वर्कआउट के बाद आर्गेनिक टोफू उत्पाद का सेवन जरूर करें।

3. ऑयल सीड्स

वर्कआउट के बाद अपनी डाइट में ऑयल सीड्स जैसे- मूंगफली, अलसी के बीज, चिया के बीज, कद्दू के बीज, और सनफ्लावर सीड्स भी शामिल करें। प्रोटीन से भरपूर ये बीज आपके शरीर को ताकत देने के साथ-साथ कई बीमारियों से भी बचाएंगे।

4. हाई प्रोटीन नट्स

भूने हुए नट्स- जैसे बादाम, काजू, पिस्ता और अखरोट का सेवन भी शरीर के लिए फायदेमंद होता है। इसमें मोनोसैचुरेटेड फैट होता है, जोकि शरीर को ताकत देने के साथ-साथ आपको बीमारियों से भी बचाता हैं। इसलिए वर्कआउट के बाद प्रोटीन से भरपूर रोस्टेड नट्स का सेवन भी जरूर करें।

5. बींस

प्रोटीन और अमीनो एसिड से भरपूर बींस मसल्स को स्ट्रांग बनाने और आपको स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। इसका सेवन नर्वस सिस्टम को ठीक रखता है और मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।

6. साबुत अनाज और बाजरा

शरीर में ताकत बनाए रखने के लिए रोजाना साबुत अनाज और बाजरे का सेवन भी जरूर करें। आप वर्कआउट के बाद ज्वार, बाजरा और क्विनो का सेवन करें। प्रोटीन युक्त इस चीजों को वर्कआउट के बाद खाने से आपको दोगुणा फायदा मिलेगा।

चेहरे पर पड़े भूरे रंग के भद्दे दागों से पीछा छुड़वाना हैं तो फॉलों करें ये टिप्स

हाइपर-पिगमेंटेशन स्किन से जुड़ी एक समस्या हैं, जिसमें त्वचा के कुछ भाग डार्क हो जाते हैं, जिन्हें हम झाइयां भी कह देते है। यह समस्या ज्यादातर चेहरे और गर्दन पर दिखाई देती है लेकिन इसका असर शरीर के बाकी हिस्सों पर भी दिखाई देता है। हाइपर-पिगमेंटेशन के कारण स्किन भद्दी लगने लगती है। अगर आप इस समस्या से परेशान है और स्किन को बेदाग बनाए रखना चाहते है तो आज हम आपको पहले तो इस समस्या का कारण, फिर इसके उपचार के लिए घरेलू नुस्खे बताएंगे, जिनके इस्तेमाल से स्किन संबंधी इस समस्या से आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है। हाइपर-पिगमेंटेशन की समस्या शरीर में मेलानिन नामक एक घटक के उच्च उत्पादन के कारण हो सकता है। इसके अलावा त्वचा का ज्यादा देर धूप के संपर्क में रहना, कुछ बीमारियां, हार्मोनल असंतुलन जैसे कारण भी त्वचा की यह प्रॉबल्म हो सकती है।

1. दही और हल्दी मास्क

चुटकीभर हल्दी में 2 चम्मच दही मिलाए और इस मिक्सचर को चेहरे पर लगाए। लगभग 30 मिनट बाद चेहरे को धो ले। यह नुस्खा हाइपर-पिगमेंटेशन से छुटकारा दिलाएगा और सूर्य की तेज किरणों से स्किन को बचाए रखेगा।

2. आलू और टमाटर मास्क

कद्दूकस किए हुए आलू से रस निकालें और इसे मैश किए टमाटर में डालकर पेस्ट तैयार करे। इस पेस्ट को डार्क पैचेस या दाग-धब्बों पर लगाए और लगभग 20 मिनट बाद धो ले। आलू में स्किन व्हाइटिंग प्रॉपर्टीज होने के कारण आप अकेले आलू का इस्तेमाल भी चेहरे पर कर सकते है। यह आंखों के नीचे पड़े डार्क सर्कल्स और सूजन को भी हटाने में कारगर है।

3. नींबू

आधे नींबू के रस में 3-4 बूंद शहद की मिलाए। फिर इस पेस्ट को पूर चेहरे पर लगाए और लगभग 10 मिनट बाद चेहरे को ठंडे पानी से धो दे। इससे न केवल स्किन पर मौजूद डार्क स्पॉट और मार्क्स दूर होंगे बल्कि इस पेस्ट के इस्तेमाल से स्किन नैचुरल तरीके से सॉफ्ट और मॉइस्चराइज्ड होगी।

4. ग्रीन टी

आप अपनी आंखों के नीचे पड़ा डार्क सर्कल्स और सूजन को टी बैग की मदद से भी हटा सकते है। इसके लिए कुछ मिनट तक अपनी आंखों पर टी बेग रखे, इससे काफी फायदा मिलेगा।

आपकी इन्हीं गलतियों की वजह से होंठ हो जाते हैं काले

गुलाबी और सॉफ्ट होंठ अच्छी सेहत की पहचान है। कई बार मौसम में बदलाव, तेज धूप,धूल- मिट्टी के कारण होठों का गुलाबी पन गायब हो जाता है। होठों के इस कालेपन से चेहरे की खूबसूरती पर भी बुरा असर पड़ता है। इसके अलावा सनबर्न, टैनिंग के अलावा और भी बहुत से कारण हैं,जिससे होंठ काले पड़ने शुरू हो जाते हैं। इन्हें दोबारा करने के लिए आप घरेलू तरीके तो अपना सकते हैं लेकिन इससे पहले होठों के कालेपन का कारण जानना जरूरी है।

होठों को मॉइश्चराइज न करना

ड्राई होंठों की केयर करना बहुत जरूरी है। पानी की कमी से भी होंठ ड्राई हो जाते हैं। इसके अलावा शीया बटर,वेसलीन और लिप बटर होठों पर लगाने से होंठ नर्म हो जाते हैं। इसके अलावा पानी का भरपूर मात्रा में सेवन करने से इनका रंग भी गुलाबी होने लगता है।

डेड स्किन न हटाना

होठों की स्किन हो या फिर चेहरा, कुछ समय बाद इन पर डेड स्किन जमा होने लगते हैं, जिसे हटाना बहुत जरूरी है। होठों पर जमा डेड स्किन को साफ न किया जाए तो इससे कालापन बढ़ने लगता है। होठों पर जमा डेड स्किन को हटाने के लिए चीनी में एक-दो बूंद नारियल तेल मिलाकर होठों पर स्क्रबिंग करें।

स्मोकिंग से बदलता है होठों का रंग

जो लोग स्मोकिंग करते हैं उनके होठों का नेचुरल गुलाबी निखार कालेपन में बदल जाता है। होठों का गुलाबीपन बरकरार रखने के लिए सिगरेट की लत से छुटकारा पाने की कोशिश करें।

शुगर फ्री हैं ये 6 फ्रूट्स, बेफिक्र होकर खाएं डायबिटीज के मरीज!

डायबिटीज यानी शुगर की बीमारी। इस बीमारी से ग्रस्त मरीज अक्सर ऐसे फलों से दूरी बना लेते हैं, जिनमें शुगर की मात्रा अधिक होती हैं। डायबिटीक लोगों को मानना है कि इनसे ब्लड शुगर लेवल बढ़ता है मगर कई फल ऐसे होते हैं, जिनमें ब्लड शुगर को कंट्रोल करने वाले तत्व जैसे विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर मौजूद होते हैं। वहीं इन फलों में पॉलीफेनोल नामक तत्व भी होता है, जो बल्ड शुगर लेवल को कंट्रोल में रखता है। इसलिए डायबिटीक मरीज को इस बात का जरूर पता होना चाहिए कि उसे किन फलों को खाना चाहिए और किन से दूरी बनानी चाहिए। आज हम आपको कुछ ऐसे फलों के बारे में बताएंगे, जिन्हें डायबिटीज में खाने से फायदा मिलेगा।

1. सेब

डायबिटीज मरीजों के लिए सेब काफी अच्छा फल हैं। एक स्टडी के अनुसार, सेब में ऐसा एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है। वहीं हार्वर्ड यूनिवर्सिटी स्टडी के मुताबिक, यह टाइप2 डायबिटीज से बचाए रखता है। सेब में जीआई की मात्रा कम होती है और विटामिन ए, कैल्शियम और आयरन से भरपूर होता हैं।

2. बेरीज

जब आप कुछ मीठा खाना पसंद करते हैं तो ब्लूबेरी, रस बेरी और क्रैनबेरी जैसे फल आपके लिए सही हैं। ब्लूबेरी में हार्ट-हैल्दी फ्लैवोनोइड्स, फाइबर और एंथोकाइनिन होते जैसे तत्व होते हैं, जो टाइप 2 डायबिटीज से बचाए रखते है। वहीं रस बेरी में विटामिनउ, फाइबर, एंथोकाइनिन और एलाजिक एसिड होते हैं, जो इंसुलिन और ब्लड शुगर लेवल को कम करते हैं।

3. एवोकैडो

अक्सर डायबिटीज मरीजों को स्ट्रॉक और हार्ट अटैक आने का खतरा बना रहता है। ऐसे में एवोकैडो शरीर में कोलेस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल में रखता है और हार्ट की प्रॉबल्म से बचाए रखता है। अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लीनिकल न्यूट्रिशन के एक अध्ययन में पाया गया कि एवोकैडो में अच्छी वसा होती है, जो टाइप2 डायबिटीज को बढ़ाने की संभावना 25 प्रतिशत कम करती है।

4. खरबूजा

खरबूजा और तरबूज दोनों विटामिन उ और एंटीऑक्सिडेंट जैसे पोषक तत्वों में समृद्ध होते हैं और कैलोरी भरपूर फूड्स के बिना ही भूख को संतुष्ट रखते हैं। खरबूजे में विटामिनअ भी होता है, जो आंखों को हैल्दी और डायबिटीज से संबंधित रेटिनोपैथी को मेंटेन रखता है।

5. रेड ग्रेपफ्रूट

रेड ग्रेपफ्रूट एलडीएल कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स को कम करने का काम करता है, जिससे हृदय रोग का खतरा कम होता है। यह फल अच्छे कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है और रक्तचाप को कम करता है।

6. टमाटर

आप इसे एक सब्जी की तरह खा सकते हैं, लेकिन तकनीकि रूप से टमाटर भी एक फल हैं, जो डायबिटीज में काफी फायदेमंद माना जाता है। इसमें न केवल विटामिनउ और अ बल्कि पोटैशियम और हार्ट-हैल्दी एंटीऑक्सीडेंट मौजूद होते हैं। टमाटर में कार्बोस में भी कम होता है। एक कप टमाटर में केवल में 32 कैलोरी होती है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

नच बलिए 10 को जज करेंगी बिपाशा बसु!

नच बलिए 10 का जल्द ही आगाज होने वाला है। सेलेब्रिटी डांस शो का पिछला सीजन जबरदस्त हिट हुआ था। खबरें हैं कि नच बलिए का 10वां सीजन करण जौहर प्रोड्यूस करेंगे। अब शो के जजेज को लेकर अपडेट सामने आया है। सूत्र के हवाले से पता चला है कि चैनल और प्रोडक्शन शो को जज करने के लिए बिपाशा बसु, डेविड धवन, वैभवी मर्चेंट से बातचीत कर रहे हैं। अभी शुरूआती फेज की बातचीत चल रही है। फिलहाल कुछ भी फाइनल नहीं हुआ है। संभव है कि अगले हफ्ते तक चीजें फाइनल हो जाएं। बीते सीजन में अहमद खान और रवीना टंडन ने शो को जज किया था। शो को होस्ट मनीष पॉल और वलूशा डिसूजा ने किया था। सीजन 9 प्रिंस नरूला और युविका चौधरी ने जीता था। 9वें सीजन को सलमान खान ने प्रोड्यूस किया था। शो में टीवी वर्ल्ड के नामी सितारों ने शिरकत की थी। कई सारे विवाद भी हुए थे जिसके चलते सीजन 9 को लेकर काफी बज बना था। सीजन 10 की बात करें तो टीवी पर इसका बिग बॉस 13 और आईपीएल 2020 से क्लैश हो सकता है। तीनों शोज एक ही समय पर टेलीकास्ट हो सकते हैं। नच बलिए और बिग बॉस के बीच टीआरपी को लेकर घमासान देखने को मिल सकता है।

सुशांत मामले में कंगना ने आयुष्मान पर साधा निशाना

सुशांत सिंह राजपूत सुसाइड मामला वक्त के साथ-साथ गहराता जा रहा है। एक तरफ सुशांत की सुसाइड को लेकर गुत्थी उलझती नजर आ रही है तो वहीं दूसरी तरफ नेपोटिज्म को लेकर बहस तेज होती नजर आ रही है। एक्ट्रेस कंगना रनौत शुरूआत से ही सुशांत सिंह राजपूत की सुसाइड का हवाला देकर कई सारे बॉलीवुड सेलिब्रिटीज पर निशाना साध रही हैं, उनपर नेपोटिज्म और ग्रुपिज्म का आरोप लगा रही हैं। अब एक्ट्रेस ने आउटसाइडर्स पर निशाना साधना शुरू कर दिया है। इस बार उन्होंने एक्टर आयुष्मान खुराना को घेरे में लिया है। कंगना रनौत बेबाक राय रखने के लिए हमेशा से जानी जाती रही हैं। सुशांत मामले में भी वे ऐसा ही करती नजर आ रही हैं। एक्ट्रेस ने महेश भट्ट करण जौहर, सलमान खान और आलिया भट्ट समेत कई सारे स्टार्स पर इल्जाम लगाए हैं। अब उन्होंने सुशांत मामले में आयुष्मान खुराना को भी घसीट लिया है। दरअसल अपने बयानों को लेकर विवादों में रहने वाले केआरके ने आयुष्मान पर आरोप लगाए और बताया कि तीन कारणों की वजह से आयुष्मान नेपो किड्स का सपोर्ट कर रहे हैं। पहला कारण ये कि आयुष्मान को बॉलीवुड में सर्वाइव करना है। दूसरा कारण ये कि यश राज फिल्म्स के आर्टिस्ट हैं। तीसरा कारण ये कि सुशांत सिंह राजपूत उनके कॉम्पिटीटर थे। आगे केआरके ने लिखा कि खुराना आप घबराएं नहीं। आपकी फिल्में भी आएंगी और जनता आपको करारा जवाब देगी। ऑल द बेस्ट। कंगना की टीम द्वारा भी केआरके के इस ट्वीट पर प्रतिक्रिया दी गई। हालांकि ट्वीट में आयुष्मान का नाम नहीं लिया गया। ट्वीट में लिखा गया कि- चापलूस आउटसाइडर्स सिर्फ एक वजह से ही माफिया का सपोर्ट करते हैं। वो है उनके विचारों की सामान्यता।

जाह्नवी कपूर को दी गई एक्टिंग सीखने की सलाह

एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर ने अपना बॉलीवुड करियर शुरू तो बहुत पहले कर दिया था लेकिन उन्होंने अभी तक सिर्फ एक ही फिल्म की है। उनकी अपकमिंग फिल्म गुंजन सक्सेना को लेकर सभी काफी उम्मीद लगाए बैठे हैं। अब जाह्नवी कपूर ने फिल्में जरूर कम की हैं, लेकिन उनकी काबिलियत को सभी ने पहचाना भी है और उसकी तारीफ भी की है। लेकिन सोशल मीडिया की दुनिया में किसी भी सेलेब को कभी भी ट्रोल किया जा सकता है। इस बार ट्रोल्स के निशाने पर जाह्नवी कपूर हैं। हाल ही में डायरेक्टर मिलाप जावेरी ने फिल्म गुंजन सक्सेना की तारीफ में कई बातें कही थीं। उन्होंने ट्वीट कर लिखा था- गुंजन सक्सेना का प्रोमो बेहतरीन है। जो भी फिल्म ओटीटी पर रिलीज होने वाली हैं, उनमें से गुंजन सक्सेना बढ़िया लग रही है। अगर ये बड़े पर्दे पर रिलीज होती तो बहुत बड़ी बन जाती। फिल्म देखने के लिए उत्साहित हूं। अब जावेरी के ट्वीट पर एक यूजर ने ऐसा सवाल दाग दिया कि हर कोई हैरान रह गया। यूजर ने मिलाप जावेरी के जरिए जाह्नवी कपूर को एक संदेश दिया। पोस्ट पर रिएक्ट करते हुए लिखा गया- ये मैजेस आप लीड एक्ट्रेस को जरूर दे दीजिएगा- एक्टिंग सीखिए। अब ये सभी को पता है कि गुंजन सक्सेना में मुख्य भूमिका में जाह्नवी कपूर नजर आ रही हैं, ऐसे में ये निशाना सीधे उन पर किया गया है। अब इस ट्रोल पर खुद जाह्नवी ने तो कुछ नहीं बोला है, लेकिन जावेरी ने जरूर मुहंतोड़ जवाब दे दिया है। यूजर के पोस्ट पर जावेरी लिखते हैं- उन्हें ऐसे किसी मैजेस या फिर नकारात्मकता की जरूरत नहीं है। उन्होंने धड़क में बेहतरीन काम किया था और वे गुंजन सक्सेना में भी अच्छा करेंगी। उनका ब्राइट फ्यूजर है। किसी भी तरह की ट्रोलिंग इस बात को नहीं बदल सकती। अब सोशल मीडिया पर मिलाप जावेरी की यूजर संग ये चर्चा वायरल हो गई है। जावेरी का ये जवाब सभी को पसंद आ रहा है।